पाठ 8

भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन

राष्ट्रवाद का उदभव :- राष्ट्रवाद का उदभव यूरोप के नवजागरणवाद के परिणामस्वरूप हुआ तथा फ्रांसीसी क्रांति के कारण राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति आगे बढ़ी | इस राजनैतिक परिवर्तन के कारण सम्प्रभुता राजा के हाथ से फ्रांसिसी नागरिकों के हाथों में चली गई | फ्रांसिसी क्रांति का नारा "उदारता, समानता एवम भ्रातृत्व" ने सम्पूर्ण संसार को एक प्रेरणा दी | अमेरिकी क्रांति, रुसी क्रांति आदि ने भी राष्ट्रवाद के विचार को और शक्तिशाली बनाया |

भारत में राष्ट्रवाद का उदय :- भारत में राष्ट्रवाद का उदय 1857 की क्रांति के बाद 19 वीं शताब्दी में हुआ | भारत में राष्ट्रवाद के उदय के लिए कई विरोध आंदोलनों जैसे - किसान आन्दोलन, सामाजिक व धार्मिक सुधार आन्दोलन आदि ने अपनी अहम भूमिका निभाई है | स्वामी विवेकानंद, ऐनी बिसेंट, हेनरी डेरोजियो आदि ने भी भारत के गौरव को फिर से जगाया | लोगों में उनके धर्म और संस्कृती के प्रति विश्वास पैदा किया गया और इस प्रकार उन्हें उनकी मातृभूमि से प्रेम का संदेश दिया | राष्ट्रवाद के बौद्धिक और आध्यात्मिक पक्ष को बंकिमचन्द्र चटर्जी, स्वामी दयानंद सरस्वती और अरविन्द घोस सरीखे लोगों द्वारा स्वर दिया गया | बंकिम चन्द्र चटर्जी का मात्रभूमि के लिए श्लोक 'वन्दे मातरम' व विवेकानंद जी का संदेश "उठो,जागो और तब तक मत रुको जब तक की लक्ष्य को प्राप्त न कर लो" | इसने भी भारतीय राष्ट्रवाद के क्रम में एक महत्वपूर्ण ताकत के रूप में काम किया | भारत में राष्ट्रवाद के उदय के लिए प्रिंटिंग प्रेस का योगदान भी अमूल्य है | इससे उदारता, समानता और भातृत्व जैसे - विचारों के विस्तृत संचार में मदद की | इस समय के आसपास कई संगठन स्थापित हुए जिन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपनी आवाज उठाई | इसमें से ज्यादातर क्षैत्रिय संगठन थे | जिसमें बंगाल एसोसिएशन, पुणे पब्लिक मीटिंग आदि काफी सक्रिय संगठन थे | इन संगठनों को सम्मिलित रूप से कार्य करने का अनुभव किया गया इस लिए वर्ष 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का निर्माण हुआ |

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का आविर्भाव (1885):- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885 में ऐलन आक्टावियन हुम् द्वारा की गई | ये एक सेवानिवृत सिविल सेवा अधिकारी थे | इन्होंने भारतीयों में राजनितिक सजगता को बढते देखा और वे इसे एक सुरक्षित संवैधानिक स्वरूप देना चाहते थे | ताकि उनका असंतोष भारत में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध सार्वजनिक क्रोध के रूप में विकसित ना हो सके | इससे उन्हें वायसराय लार्ड डफरिन एवम प्रसिद्ध भारतीयों के एक समूह की मदद मिली | कलकता के वोमेश चन्द्र बनर्जी इसके पहले अध्यक्ष के रूप में चुनें गए | इनके नेताओं का ब्रिटिश सरकार और इसके न्याय में पूरा विश्वास था | वे मानते थे कि यदि वे सरकार के सामने तर्क पूर्ण ढंग से शिकायत रखेंगे तो अंग्रेज निश्चित रूप से उनमें सुधार करेंगे | इन उदार नेताओं में सबसे प्रसिद्ध फिरोजशाह मेहता, गोपाल कृष्ण गोखले, दादा भाई नोरोजी, रास बिहारी बोस, बदरूद्दीन तयैब्जी इत्यादि थे | 1885 से 1905 तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रभाव शिक्षित शहरी भारतीयों तक ही सीमित था | इसका पहला उद्देश्य भारतीयों की ओर से ब्रिटिश सरकार से बात करना व भारतीयों की शिकायतों को आवाज देने तक ही सीमित था | इस युग को नरमपंथियों का युग कहा गया है |

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का आरम्भिक चरण :- इसके प्रथम 20 वर्षो के दौरान कांग्रेस ने नरमी से मांगे रखी | उन्होंने (क) विधान सभा में प्रतिनिधित्व (ख) सेवाओं का भारतीय करण (ग) सेना खर्च में कमी (घ) कृषकों के बोझ में कमी (ड) नागरिक अधिकारों की रक्षा (च) न्यायपालिका का कार्यपालिका से पृथकरण (छ) काश्तकार नियम में बदलाव (ज)

भूमि से आय एवम नमक कर में कमी (झ) भारतीय उधोग एवम हस्तशिल्प के विकास में मदद हेतु नीति और (ण) लोगों के लिए कल्याण कर्यक्रम लाने के लिए कहा। कांग्रेस ने सरकार के समक्ष मांग हमेशा आवेदन के रूप में कानूनी नियमों में रहकर रखी | इसी वजह से कांग्रेस के पहले नेताओं को नरमपंथी कहा गया है। यह प्रयास भारत में अंग्रेजों की नीति एवम प्रशासन में कोई सुधार नहीं ला पाया। 1887 के बाद अंग्रेज नरमपंथीयों की मांगों को पूरा नहीं करते | कांग्रेस की एकमात्र सफलता भारतीय परिषद् अधिनियम 1892 को करना है | जिसमें कुछ गैर कार्यालीय सदस्यों को शामिल कर विधान सभा का विस्तार किया और भारतीय सिविल सेवा परीक्षा को भारत और लन्दन में एक साथ कराने का समाधान पास किया गया। कांग्रेस अपने लक्ष्य को पाने में असफल रही किन्तु राष्ट्रीय जागृति लाने एवम लोगों के मन में एक देश से सम्बन्ध होने का भाव लाने में सफल रहरहे। कांग्रेस की सबसे बड़ी सफलता एक राष्ट्रीय आन्दोलन की नींव रखने की थी। अब अंग्रेजों ने शिक्षा को नियंत्रित करने और प्रेस को कुचलने के लिए कड़े नियम पारित किए। उसने भारतीय विश्वविद्यालयों पर कड़े नियम आरोपित कर 1904 में विश्वविद्यालय अधिनियम पारित किया।

बंगाल का विभाजन (1905) :- 1905 में लार्ड कर्जन ने बंगाल के विभाजन की घोषणा की और इसका कारण प्रशासन में सुधार करने का प्रयास बताया गया किन्तु वास्तव में इसका मुख्य लक्ष्य "फूट डालो और राज करो" का था। इसके दवारा देश में साम्प्रदायिकता फैलाने का मकसद था ताकि हिन्दू और मुसलामन बंट जाए। इसका विरोध हिन्दू और मुसलमानों ने एक दूसरे को राखी बांध कर किया। बाल गंगाधर तिलक ने इसके विरोध में बहिष्कार और स्वदेशी आन्दोंलन के महत्व को स्वीकार किया। जिसका सभी आयु वर्ग के स्त्री पुरुषों ने समर्थन किया। जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय कुटीर उधोग को भी पुन: शुरू किया गया व अंग्रेजों ने 1911 में बंगाल विभाजन वापस ले लिया और बंगाल पुन: एक हो गया | उस दौरान गरम दल की भूमिका को सराहा गया।

गरम दल का उदय :- कांग्रेस में नरमपंथियों की विनम्र नीति ही अतिवादी एवम उग्रसुधार राष्ट्रवाद आन्दोलन का प्रथम दौर एक ओर कांग्रेस के विरुद्ध सरकार की प्रतिक्रिया और दूसरी ओर कांग्रेस में 1907 में आये दरार के साथ ही ख़त्म हो गया | वह इसलिए की 1905 से 1918 तक की अवधि को अतिवादी, उग्र राष्ट्रवादियों या गरम दल का युग कहा जाता है | लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक एवं विपिन चन्द्र पाल (लाल, बाल, पाल) उग्रपंती दल के महत्वपूर्ण नेता थे | इन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को एक नया रूप दिया | इनके अनुसार नरमपंती भारत का राजनीतिक लक्ष्य तय करने में असफल रहे | इनके दवारा अपनाया तरीका प्रभावहीन था | इसके अलावा वे उच्च, जमीदार वर्ग तक सीमित रहे | गरम दल का मानना था कि अंग्रेज भारतीयों का शोषण करते हैं | उसकी आत्म प्रचुरता को नष्ट करते हैं | इनका मानना था कि अब भारतीय को खुद सरकार चलानी चाहिए | गरमपंथी सरकार की नीतियों की आलोचना करने, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने, स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करने आदि में विश्वास करते थे। आजादी के लिए तिलक ने नारा दिया "आजादी मेरा जन्म सिध्द अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे" |

मुस्लिम लीग का गठन(1906) :- भारत में जैसे जैसे उग्र परिवर्तनवादी आन्दोलन शक्तिशाली हुए ब्रिटिश भारतीयों की एकता को तोड़ने का रास्ता तलाशने लगे। उन्होंने बंगाल विभाजन के द्वारा भी यही प्रयास किया | उन्होंने मुसलमानों को अपना खुद का एक स्थाई राजनैतिक संघठन बनाने को उकसाया | दिसम्बर 1906 में ढाका में मोहम्मडन एजुकेशनल कांफ्रेस के दौरान नवाब सलीम उल्लाह खान ने मुस्लिम हितों की देखभाल के लिए सेंट्रल मोहम्मडन एसोसिएशन की स्थापना का विचार दिया। 30 दिसम्बर 1906 में आल इंडिया मुस्लिम लीग की स्थपना हुई। जिसके अध्यक्ष आगा खान थे। मुस्लिम लीग का मुख्य उद्देश्य मुसलमानों के अधिकारों की रक्षा करना व इनकी

जरूरतों की सरकार के सामने रखना था | इसे ब्रिटिश की 'फूट डालो और राज करो' के सफल परिणाम के रूप में देखा गया है | बाद में मोहम्मद अली जिन्ना मुस्लिम लीग के सदस्य बने |

मार्ले - मिंटो सुधार - भारत विधान परिषद् अधिनियम 1892 जिसमें केन्द्रिय विधान सभा मे सदस्यों की सख्या बढाकर विधायिका का विस्तार कर दिया था | 1909 विधान परिषद् अधिनियम 1892 के सुधारों का एक विस्तार था | जिसे राज्य सचिव लार्ड मार्ले एव वायसराय लार्ड मिंटो के नाम पर लार्ड मिंटो सुधार के नाम से जाना गया | उसने विधान सभा में सदस्य सख्या 16 से बढाकर 60 कर दिया | कुछ अनिर्वाचित सदस्यों को भी शामिल कर लिया गया | इससे विधान परिषद् सदस्यों की सख्या बढ़ गई किंतु उसके पास वास्तव में शक्ति नही थी। हिंदु और मुस्लिमों में फूट डालने के लिए मुस्लिम प्रभावी क्षेत्र से मुस्लिम प्रत्याशी के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र दिया गया।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान राष्ट्रीय आन्दोलन - 1914 में प्रथम विश्व युद्ध प्रारम्भ हुआ। यह युद्ध यूरोप के देशों के बीच औपनिवेशिक एकाधिकार पाने के लिए लड़ा गया | इस युद्ध में ब्रिटिश सरकार ने भारतीय नेताओं से सहयोग मागा और बदले में युद्ध समाप्त हो जाने पर भारतीय लोगों को संवैधानिक शक्ति दे देने की भारतीय नेताओं की शर्त मानी | इस युद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार ने बहुत बड़ा कर्जा लिया था। जिसे चुकाने के लिए उन्होंने भारत में लगान बढ़ा दिया | आवश्यक वस्तुओं के दाम बढ़ा दिये और व्यक्तिगत एव पेशे से प्राप्त आय पर कर लगा दिया | भारतीयों को जबरदस्ती ब्रिटिश फौज में भर्ती किया गया। जिससे भारतीय लोगों में असंतोष पैदा हुआ जिसके कारण चम्पारण बारदोली खेडा और अहमदाबाद के किसानों ने ब्रिटिश सरकार की शोषणकारी नीतियों के खिलाफ डटकर विरोध किया | छात्रों, वकीलों और महिलाओं ने भी विरोध में साथ दिया और विदेशी वस्तुओं को जलाकर बहिष्कार किया |

नरम दल और गरम दल का एकजुट होना - (प्रथम विश्व) युद्ध काल के दौरान नरम दल और गरम दल 1916 के कांग्रेस के लखनऊ सम्मेलन में एक साथ आये। मुस्लिम लीग एवम कांग्रेस अलग निर्वाचन क्षेत्र पर सहमत हो गये और दूसरे दल को जहाँ कही वे अल्पमत में थे महत्व देने का निर्णय दिया | इस समझौते व होमरूल आन्दोलन द्वारा किये गये कार्यो से लोगों में आत्मविश्वास और लग्न पैदा हुई | भारतीयों को शांत करने के क्रम में 1919 में मान्टेग्यु - चेम्सफोर्ड सुधार आया। इससे दोहरे शासन का प्रस्ताव रखा जो एक प्रकार से राज्यों में दो सरकारे थी | आटोमन साम्राज्य का पवित्र स्थान खलीफा के हाथों में देने के बजाय उसके विभाजन हो जाने पर मुस्लिम नाराज हो गये और उन्होंने इसे खलीफा का अपमान माना | इससे शौकत अली और मोहहमद अली ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध खिलाफत आन्दोलन की शुरुआत की | प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद अंग्रेजी सरकार ने एक अन्य अधिनियम पारित किया। जिसे रोलट एक्ट के नाम से जाना जाता है | यह अधिनियम ब्रिटिश सरकार को किसी भी व्यक्ति पर बिना न्यायालय में मुकदमा चलाने, गिरफ्तार करने और जेल भेजने का अधिकार देता था तथा भारतीय को किसी भी प्रकार के हथियार रखने पर भी रोक लगा दी | जिससे सिख क्रुद्ध हो गए और इसे अपने धर्म का अपमान समझने लगे |

13 अप्रैल 1919 को बैशाखी मेले के अवसर पर जलियांवाला बाग अमृतसर में लोग इस अधिनियम के शांतिपूर्ण विरोध के लिए एकत्र हुए। अचानक ब्रिटिश अधिनियम जनरल डायर ने वंहा गोलियां चलाने का आदेश दे दिया | जिससे वंहा कुछ ही मिनटों में लगभग एक हजार व्यक्ति मारे गये | इस हत्याकांड से भारतीय लोगों में उग्र क्रोध भड़क गया। रविन्द्रनाथ टेगोर ने भी इस के खिलाफ ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदत्त नाईटहुड की उपाधि लौटा दी थी।

गाँधी जी का उदय - मोहनदास करमचंद गाँधी ब्रिटेन से प्रशिक्षित वकील थे। वे 1893 में दक्षिण अफ्रीका गए और वहां 21 वर्षो तक रहे। अंग्रेजों द्वारा दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ हो रहे दुर्व्यवहार ने उनकी अंतरात्मा को झकझोड़ दिया और उन्होंने इसके खिलाफ लड़ने का निर्णय कियाकिया। इसी समय सत्याग्रह की तकनीक विकसित की व गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका में इस सघर्ष में सफल रहे वे 1915 में भारत लौटे। 1916 में अहमदाबाद में साबरमती आश्रम की स्थापना की। गोपाल कृष्ण गोखले ने उन्हें देश के लोगों खास तौर से गाँवों के लोगों की समस्या को समझने की सलाह दी। 1917 में बिहार के चंपारण में सत्याग्रह का प्रथम प्रयोग किया।

अहसयोग आन्दोलन - गांधीजी ने ब्रिटिश सरकार की नीतियों से असंतुष्ट होकर अगस्त 1920 में असहयोग आन्दोलन को प्रारम्भ किया। जिसमें उन्होंने सरकार का साथ न देने की अपील कीं। इसी समय खिलाफत आन्दोलन और गांधीजी के नेतृत्व में अहसयोग आन्दोलन मिलकर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ एक मोर्चा बना। इसके लिए गांधीजी ने एक विस्तृत कार्यक्रम तय किया।

पदवी तथा सम्मान लौटाना

निकायों के पदों से त्यागपत्र

कार्यालयों और गैर कार्यलय के कार्यो में उपस्थित होने से इनकार

सरकार के द्वारा संचालित विधालयों और गैर कार्यलयों से धीरे धीरे छात्रों को हटाना

वकीलों के द्वारा ब्रिटिश न्यायालय का बहिष्कार करना

सैनिक लिपिक तथा मजदूर वर्गों की सेवा की नियुक्ति का इनकार

विधानसभा के चुनाव में प्रत्याशी तथा मतदाताओं का बहिष्कार

राष्टीय स्कूल और कॉलेज स्थापित किये गए बाद में सर्जनात्मक कार्यक्रम के द्वारा इसे बढ़ावा दिया गया | जिसके तीन मुख्य उद्देशय थे 1.स्वदेशी को बढ़ावा देना खासकर हस्तकरघा और बुनाई, 2. हिन्दुओं में अस्पश्यता का अंत, 3. हिन्दू मुस्लिम एकता को बढ़ावा देना।

इस आन्दोलन से लोगो में जोश फैला और बड़ी सख्या में लोगो ने आन्दोलन में भाग लिया | लेकिन इस आन्दोलन के दौरान कई हिंसक घटनायें घटी जो गांधीजी के विचारों से अलग थी | उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के चोराचोरी गाँव में 9 फरवरी 1922 को असहयोग आन्दोलन के दौरान हिंसा फैली | इसके बाद बरेली में हिंसा की एक और घटना घटी | इन सभी घटनाओं की वजह से 14 फरवरी 1922 में गांधीजी ने अहसयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया | 1 जनवरी 1923 को सी.आर.दास., मोतीलाल नेहरु व कुछ अन्य नेताओं ने स्वराज पार्टी की स्थापना की | जिसमें दास अध्यक्ष व नेहरु पार्टी के सचिव बने। 1927 में ब्रिटिश सरकार ने सर जान साइमन की अध्यक्षता में एक कमीशन नियुक्त किया | जिसका कोई भी भारतीय सदस्य नही था। जब कमीशन भारत आया तो लोगों ने इसका बहिष्कार किया और विरोध में साइमन कमीशन वापस जाओ के नारे लगाये। इन प्रदशनों में कई जगह ब्रिटिश सरकार ने लाठी चार्ज करवाए। एक बार लाला लाजपत राय को बुरी तरह से पीटा जिससे बादमें उनकी मत्यु हो गई | इस समय भारतीय राजनैतिक नेता संविधान बनाने में व्यस्त हो गए।

दांडी मार्च - 26 जनवरी 1930 को कांग्रेस ने पूर्ण स्वंतत्रता दिवस मनाया | उसी समय सरकार ने नमक के उपयोग पर टैक्स लगा दिया | जिसका लोगों ने विरोध किया लेकिन ब्रिटिश सरकार ने लोगों के विरोध पर ध्यान नही दिया | मार्च-अप्रेल 1930 के समय गाँधीजी ने साबरमती से दांडी तक शांति पूर्ण यात्रा निकाली व 6 अप्रेल 1930 को नमक कानून को कुशलतापूर्वक तोडा | इस आन्दोलन में किसान व्यापारी तथा महिलायें ने बड़ी सख्या में भाग लिया | सरकार ने मई 1930 में गाँधीजी को गिरफ्तार करके पूना के यरवदा जेल में बंद कर दिया गया |

क्रांतिकारी - अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों से देश के युवाओं में गहरी घृणा पैदा हुई | इन युवाओं का यह विश्वास था कि एक संगठित आन्दोलन के द्वारा ही भारत को स्वतंत्रता दिलवाई जा सकती है | इसी के परिणामस्वरूप इन युवाओं ने गुप्त रूप से क्रांतिकारी गतिविधि प्रारंभ कर दी और हिंसा का उग्र तरीका अपना लिया | अब पैसे और हथियारों के लिए लूट, डकैती व हिंसा के मार्ग पर चल पड़े | पंजाब, महाराष्ट्र, बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश, उड़ीसा उनके क्रियाकलापों का केंद्र था | इन्हें क्रांतिकारी कहा जाने लगा | इनमें खुदीराम बोस, प्रफुल चाकी, भूपेन्द्रनाथ दत्त, वि.डी. सावरकर, भगतसिह, राज गुरु, सुखदेव, चन्द्रशेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल, असफ्फाल खान आदि मुख्य थे | इन्होंने कई घटनाओं को इन्जाम दिया | जैसे - काकोरी कांड | अंग्रेज अधिकारी की हत्या विधान सभा में बम फेकना आदि बम फेकनें की वजह से भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु को 1931 में फांसी दे दी गई | लोगों ने इनसे प्रेरणा ली और इन्हें शहीद का दर्जा दिया |

सांप्रदायिक विभाजन - "फुट डालो और राज करो की नीति" का प्रारम्भ ईस्ट इंडिया कम्पनी ने उन दिनों में काम किया | जब अंग्रेज अपने आपको भारत के शासक के रूप में स्थापित कर रहे थे | 1932 का कम्युनल अवार्ड इसी नीति की एक पहल थी | क्योंकि इसने ही आरक्षण और अलग चुनाव क्षेत्र की अनुमति दी थी | 1935 वे अधिनियम के अधीन 17 अलग चुनाव क्षेत्र बनाये गए | दो राष्ट्र सिद्धांत 1938 में आया और जिन्ना ने 1940 में खुलकर इसका समर्थन किया | जब पाकिस्तान की मांग की गई तो अंग्रेज हुकुमत ने इसे प्रोत्साहित किया | इन घटनाओं के बीच पूरी तरह कानून व्यवस्था के टूटने व ब्रिटिश शासन से छुटकारा पाने के लिए भारत - पाकिस्तान का विभाजन स्वीकार कर लिया गया |

स्वतंत्रता की प्राप्ति 1935-1947 - मार्च 1933 में अंग्रेजी सरकार ने श्वेत पत्र तैयार किया | इस श्वेत पत्र के आधार पर एक बिल बनाया गया तथा उसे दिसम्बर 1934 में संसद में प्रस्तुत किया गया | बिल अंततः 2 अगस्त 1935 को भारत सरकार अधिनियम 1935 के नाम से पारित हुआ | यह अधिनियम अंग्रेजों के खुद के अधिकारों की रक्षा करता था | राष्ट्रीय एकता के उद्भव को हतोत्साहित करता था जबकि अलगाव और सांप्रदायिकता को बढ़ावा देता था | नेहरु, जिन्ना समेत सभी राष्ट्रवादियों ने इस अधिनियम की भत्सर्ना की | 1937 के चुनाव में कांग्रेस बहुमत में आई | ग्यारह प्रान्तों में से सात प्रान्तों में कांग्रेस सरकार बनी |

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान राष्ट्रीय आन्दोलन 1939 में जब द्दितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ तब काग्रेस ने बिना शर्त सहयोग देने से इनकार कर दिया | कांग्रेस ने मांग की कि भारत को एक स्वतन्त्र संघ घोषित कर दिया जाये और अंग्रेज सहमत नही हुए | इस पर 1939 में सभी मंत्रियों ने इस्तीफा दे दिया | 1940 में सी. राजगोपालाचारी के अनुरोध पर केंद्र में अस्थायी राष्ट्रीय सरकार की मांग की गई | इसे वायसराय लार्ड लिनलिथगो द्दारा अस्वीकार कर दिया गया | अक्तूम्बर 1940 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरु किया गया | आचार्य विनोबा भावे व्यक्तिगत सत्याग्रह देने वाले थे | मार्च 1942 में सर स्टेफोर्ड क्रिप्स घोषणापत्र भारत में लेकर आये लेकिन इसमें भी सम्पूर्ण स्वतत्रता की कोई घोषणा नहीं होने के कारण काग्रेस ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया | मुस्लिम लीग ने भी इसे अस्वीकार

किया। जिससे क्रिप्स मिशन असफल हो गया। अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए 1942 में इंडियन इंडिपडेंस लीग की स्थापना की और भारत की आजादी के लिए इंडियन नेशनल आर्मी के गठन का निर्णय लिया गया | रासबिहारी बोस के आमंत्रण पर 13 जून 1943 को सुभाष चन्द्र बोस पूर्वी एशिया आये। उन्हें इंडियन इंडिपडेंस लीग का अध्यक्ष और आजाद हिन्द फौज i.n.a. का अध्यक्ष बनाया गया। नेताजी ने दिल्ली चलो का प्रसिद्द युद्ध घोष दिया और स्वतंत्रता का वादा उन्होंने "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा" कह कर किया।

भारत छोडो आन्दोलन - क्रिप्स मिशन की असफलता ने भारतीयों को निराश व क्रोधित कर दिया | अब यह अनुभव किया गया कि ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध एक विशाल आन्दोलन शुरू करने का समय आ गया है | दूसरी ओर भारत में अंग्रेजों की उपस्थिति जापान को भारत पर आक्रमण का निमंत्रण दे रही थी अर्थात अंग्रेजों की वजह से जापान कभी भी भारत पर आक्रमण कर सकता था। कांग्रेस ने गांधीजी के अधीन यह अनुभव किया कि अंग्रेज को भारत छोड़ने के लिए बाध्य किया जाए। 14 जुलाई 1942 को वर्धा में भारत छोडो प्रस्ताव पारित किया गया | 8 अगस्त को व्यापक संघर्ष का निर्णय लिया और गाँधी जी ने "करो या मरो" का नारा दिया | 9 अगस्त 1942 को आन्दोलन प्रारम्भ हो पाता उस से पहले ही सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया | जनप्रिय नेताओं की गिरफ्तारी की खबर ने राष्ट्र को सदमें में डाल दिया। उनका क्रोध और असंतोष असंख्य विरोधों, हड़तालों, जुलूसों और हिंसक विरोधों में देश के सभी भागों में व्यक्त हुआ था।

भारत की आजादी और विभाजन - संविधान सभा की शक्ति को लेकर कांग्रेस और मुस्लिम में शीघ्र ही मतभेद उभर आए। अंत में मुस्लिम लीग ने 1946 के मध्य में केबिनेट मिशन की योजना अस्वीकार कर दिया | सितम्बर 1946 में कांग्रेस ने केंद्र में सरकार बनाई तो लीग ने हिस्सा लेने से मना कर दिया। मुस्लिम लीग ने 16 अगस्त 1946 के दिन पाकिस्तान लेने के लिए सीधी कार्यवाही दिवस मनाया। जिससे देश में बड़े पैमाने पर सांप्रदायिक दंगे फैल गए। जिससे हजारों लोग दंगो में मारे गए। लाखों लोग बेघर हो गए। इसी बीच माउन्टबेटन को वायसराय बनाकर भारत भेजा गया। उसने अपनी योजना जून 1947 को रखी। जिसमें भारत का विभाजन था | भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 अस्तित्व में आया। इसने भारतीय उपमहादीप को 2 भागों में बांट दिया | वे थे भारतीय संघ और पाकिस्तान। भारत ने 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता पाई थी।